RISHIKUL SANATAN COLLEGE

YEAR 13

हिन्दी

Monday – 07/06/21 –Tuesday-06/06/21

“तुलसी एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रतिभा थे, जो युगों के बाद एक बार आया करती है तथा ज्ञान-विज्ञान, भाव-विभाव अनेक तत्तों का समाहार होती है।”

गोस्वामी तुलसीदास जीः- रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका प्रमुख ग्रन्थ “**श्रीरामचरितमानस**” भारत में ही नहीं वरन् सम्पर्ण विशव में विख्यात है। यह भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करनेवाला एक ऐसा निर्मल दर्पण है, जो सम्पूर्ण विश्व में एक अनुपम एवं अतुलनीय ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसलिए तुलसीदासजी न केवल भारत के कवि वरन् सारी मानवता के, सारे संसार के कवि माने जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास का जीवन- परिचय

इनकी प्रतिभा इतनी विराट थी कि उसने भारतीय संस्कृति की सारी विराटता को आत्मसात् कर लिया था। ये महान द्रष्टा थे, परिणामतः स्रष्टा थे। ये विश्व कवि थे और हिन्दी साहित्य के आकाश थे, सब कुछ इनके घेरे में था।

नाम	**तुलसीदास**
जन्म	**संवत् 1554 (सन् 1497 ई०)**
जन्म – स्थान	**राजापुर(बाँदा)**
मृत्यु	**सवत् 1680 पि० (सन् 1623 ई०)**
मृत्यु – स्थान	**असीघाट**

पिता का नाम	**आत्मा राम दुबे**
माता का नाम	**हुलसी**
गुरु	**बाबा नरहरिदास**
भाषा	**अवधि और ब्रज**
कृतियाँ	**श्रीरामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोटावली**

प्रारम्भिक जीवनः-

तुलसीदास जी का प्रारम्भिक जीवन अनेक संकटों से घिरा हुआ था। इनका जन्म अमुक्तमूल नक्षत्र में हुआ था। इनका जब जन्म हुआ तब ये पाँच वर्ष के बालक मालूम होते थे, दाँत सब मौजूद थे और जन्मते ही इनके मुख से राम का शब्द निकला। आश्चर्यचकित होकर इन्हें राक्षस समझकर माता-पिता ने इनका त्याग कर दिया। ये दाने-दाने के लिए द्वार-द्वार भटकने लगे। जनश्रुतियों के आधार पर यह कहा जाता है कि तुलसीदास का बचपन अत्याधिक कष्टमय था। स्वयं तुलसी ने अपनी कृतियों में कहा है कि वे बाल्यकाल से ही माता-पिता द्वारा परित्यक्त कर दिये गये तथा संतप्त एवं अभिशप्त की तरह इधर-उधर घूमा करते थे—

“माता पिता जग जायि तज्यो, विधि हूँ न लिखी कुछ भाल भलाई।
बारे ते ललात बिलतात द्वार द्वार दीन, जानत हौं चारि फल चारि ही चनक कौं।

लगभग 20 वर्षों तक इन्होंने समस्त भारत का व्यापक भम्रण किया, जिससे इन्हें समाज को निकट से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ये कभी काशी, कभी अयोध्या और कभी चित्रकूट में निवास करते रहे। अधिकांश समय इन्होंने काशी में ही बिताया।

जन्म-स्थानः-

बेनीमाधव प्रणीत **मूल गोसाई चरित** तथा महात्मा रघुवरदास रचित “**तुलसीचरित**” में तुलसीदासजी का जन्म विक्रमी **संवत् 1554 (सन् 1497 ई०)** बताया जाता है। बेनीमाधवदास की

रचना में गोस्वामी जी की जन्म तिथि श्रावण शुक्ल सप्तमी का भी उल्लेख है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है—

पन्द्रह सौ चौवन बिसै, कालिंदी के तीर।
श्रावण सुक्ला सप्तमी, तुलसी धरयो शरीर।

तथा निष्कर्ष रूप में जन श्रुतियों एवं सर्वमान्य तथ्यों के अनुसार इनका **जन्म सन् 1532 ई०(संवत 1589 वि०)** को वर्तमान चित्रकूट जिले के अन्तर्गत राजापुर(बाँदा) के सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में माना जाता है।

माता-पिताः-

गोस्वामी तुलसीदासजी के माता का नाम **श्रीमती हुलसी** एवं पिता का नाम **श्री आत्मा राम दुबे** था।

बचपन का नामः-

लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास जी के बचपन का नाम **तुलाराम** था।

गुरुः-

गोस्वामी तुलसीदास जी के गुरु **बाबा नरहरिदास** जी थे। तुलसीदास जी ने अपने इन्हीं गुरु का स्मरण इस पंक्ति में किया है—

'बन्दौ गुरुपद कंज, कृपासिन्धु नर-रूप हरि।'

शिक्षाः-

तुलसीदास जी का पालन-पोषण प्रसिद्ध सन्त बाबा **नरहरिदासजी** ने किया और इन्हें ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रदान की। तुलसीदास जी बाबा नरहरिदासजी को अपना गुरु मानते थे। और उन्हीं से **वेदशास्त्र, इतिहास पुराण** और **काव्य कला** का अध्ययन करके तुलसी **महान् विद्वान** हुए।

गोस्वामी तुलसीदास का गार्हस्थ्य जीवन व वैराग्य की भावना :-

कविपय प्रबल जनश्रुतियों और बाह्म साक्ष्यों के आधार पर 23 – 24 वर्ष की अवस्था में बदरिका ग्राम के निवासी दीनबन्धु पाठक की कन्या "रत्नावली" से उनका विवाह हुआ | प्रसिध्द है कि रत्नावली की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य उत्पन्न्य हुआ | तुलसीदास जी अपनी रूपवती पत्नी के प्रति अत्याधिक आसक्त थे | कहा जाता है कि एक दिन जब तुलसीदास घर पर नहीं थे तब रत्नावली बिना बताये ही मायके चली गयी | घर आने पर

रत्नावली को न पाकर उसी क्षण जोरो की वर्षा होने व नदी में अत्याधिक बाढ होते हुए भी प्रेमातुर तुलसी अर्ध्दरात्रि में ही आंधी – तूफान का सामना करते हुए अपनी ससुराल जा पहुंचे | उन्हें इस अवस्था में देखकर पत्नी ने उन्हें धिक्कारते हुए कहा –

"लाज न आवत आपको , दौरे आयउ साथ |
धिक – धिक ऐसे प्रेम को, कहाँ कहौं मैं नाथ |
अस्थि चर्म माय देह मम, तामें ऎसी प्रीति |
तैसी जो कहूँ राम में, होति न तब भवभीति ||"

कहा जाता है कि पत्नी के इसी फटकार ने तुलसी के मानस पटल को खोल दिया और वे अपने जीवन से विरक्त हो वैराग्य की ओर उन्मुख हुए पत्नी के एक ही व्यंग्य से आहत होकर ये घर – बार छोड़कर काशी आये और सन्यासी हो गये |

मृत्यु – स्थान :-

जीवन का अधिकांश समय इन्होने काशी में बिताया और यही **सवत् 1680 वि० (सन् 1623 ई०)** में श्रावन कृष्ण पक्ष तृतीया शानिवार को असीघाट पर तुलसीदास राम – राम कहते हुए परमात्मा में विलीन हो गये | इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रचलित है –

" संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर |
श्रावण कृष्णा तीज शन, तुलसी तज्यो शारीर|| "

गोस्वामी तुलसीदास जी को 'लोकनायक' क्यों कहा जाता है :-

"भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके | बुध्य समन्वयकारी थे, गीता में समन्वयवाद को अपनाया गया है, तुलसी भी समन्वयवादी थे |" कविकुल चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जी का अविर्भाव ऐसे युग में हुआ, जब धर्म, समाज और राजनीति के क्षेत्रो में सर्वत्र पारास्परिक वैषम्य एवं विभेद का ताण्डव नृत्य हो रहा था | तत्कालीन संत कवि सारे भारत में भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे | गोस्वामी जी उन्ही सन्त कवियों में से एक थे जिन्होंने तत्कालीन परिस्थिति का गहराई से अध्ययन एवं अनुशीलन करके समाज में व्याप्त विषमता एवं वैमनस्य को दूर करने का प्रयत्न किया गोस्वामी जी ने इस विकृत रूप को दूर करने के लिए समन्वयात्मक बुध्दि से काम लिया |

इस समन्वय के लिए तुलसी ने सामाजिक, पारिवारिक, अध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रो को चुना और इनमे समन्वय स्थापित करते हुए जन – जीवन में व्याप्त तत्कालीन घोर अशांति एवं अत्याचार आदि को दूर करने की सफल चेष्टा की | इसीलिए उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा से ओत – प्रोत कहा जाता है और इसी समन्वयात्मक दृष्टिकोण के कारण ही तुलसीदास जी को '**लोकनायक**' कहा जाता है |

साहित्यिक व्यक्तित्व:-

महाकवि तुलसीदाल एक उत्कृष्ट कवि ही नहीं, महान लोकनायक और तत्कालीन समाज के दिशा – निर्देशक भी है इनके द्वारा रचित महाकाव्य '**श्रीरामचरितमानस**' भाषा, भाव, उद्देश्य , कथावस्तु, चरित्र – चित्रण तथा संवाद की दृष्टि से हिंदी साहित्य का एक अद्भुत ग्रन्थ है | इसमे तुलसी के कवि, भक्त एवं लोकनायक रूप का चरम उत्कर्ष दृष्टिगोचर होता है | '**श्रीरामचरितमानस**' में तुलसी ने व्यक्ति, परिवार, समाज राज्य, राजा, प्रशासन, मित्रता, दाम्पत्य एवं भ्रातृत्व आदि का जो समाज का पथ – प्रदर्शन करता रहा है |
'विनयपत्रिका' ग्रन्थ में ईश्वर के प्रति इनके भक्त ह्रदय का समर्पण दृष्टिगोचर होता है | इसमे एक भक्त के रूप में तुलसीदास ईश्वर के प्रति दैन्यभाव से अपनी व्यथा – कथा कहते है | तुलसी की भक्ति राम के प्रति अनन्यभाव की है | जैसे चातक और बादल का प्रेम होता है | थिओक उसी प्रकार तुलसी की भक्ति चातक जैसी है जिसे केवल राम ही का बल हैं, उन्हीं पर उनका आस और विशवास टिका है –

एक भरोसा एक बल, एक आस विश्वास |
एक राम धनस्याम हित, चातक तुलसीदास ||

तुलसीदास एक विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न तथा लोकहित एवं समन्वय भाव से युक्त महाकवि थे | भाव – चित्रण, चरित्र – चित्रण एवं लोकहितकारी आदर्श के चित्रण की दृष्टि से इनकी काव्यात्मक प्रतिभा का उदाहरण सम्पूर्ण – विश्व – साहित्य में भी मिलाना दुर्लभ है |

कृतियाँ :-

यद्दपि नम्रतावश तुलसी ने अपने को कवि नहीं मन पर काव्यशास्त्र के सभी लक्षणों से युक्त इनकी रचनाएँ हिंदी का गौरव है | श्रृगार का जैसा मर्यादित वर्णन इन्होने किया है वैसा आज तक किसी दुसरे कवी से न बन पड़ा |

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लिखित 37 ग्रन्थ माने जाते है किन्तु प्रामाणिक ग्रन्थ 12 ही मान्य है, जिनमे पांच प्रमुख है – **श्रीरामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोटावली |**

श्रीरामचरितमानस :-

अवधी भाषा में रचित रामचरितमानस बड़ा लोकप्रिय ग्रन्थ है | विश्व साहित्य के प्रमुख ग्रन्थो में इसकी गणना की जाती है | तुलसी के ग्रन्थ '**श्रीरामचरितमानस**' दिशाहीन भारतीय समाज को प्रत्येक क्षेत्र में मार्ग दिखाया और उसके सामने जीवन के ऐसे आदर्श को रखा जो वास्तव में संसार के प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक समाज के लिए आदर्श हो सकता है |

" एक भरोसा एक बल, एक आस – विश्वास |
रामचरित – मानस रचौं, जय हो तुलसीदास || "

विनयपत्रिका :-

इसमे भक्त के रूप में तुलसी ने अपने ह्रदय की ग्लानि, दैन्य, विरक्ति , रिराशा , कुण्ठा , पीड़ा , एकनिष्ठता और विश्वास का सुन्दर परिचय दिया है उनका भक्ति – भाव उनके अंत: करण का इतिहास है '**विनयपत्रिका**' में उनका सर्वोत्कृष्ट भक्त रूप मुखरित हुआ है |

कवितावली:-

भावानुरूप भाषा ही इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है इसमे राम के शौर्य का वर्णन एवं हनुमान का लंकादहन सर्वश्रेष्ठ है |

गीतावली :-

इस ग्रन्थ की अधिकांश कथावस्तु 'रामचरितमानस' से मिलती – जुलती | उस समय की लगभग समस्त सग – रानिगियाँ गीतावली में समाहित है |

दोहावली :-

इन दोहों में सामान्यत: नीति – धर्म, भक्ति – प्रेम, राम – महिमा, खल – निन्दा, सज्जन – प्रशंसा आदि वर्णित है | इस ग्रन्थ का काव्य – गुण उच्चकोटि का है |

अन्य ग्रन्थ :-

सं० 1621 वि० है | इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर 243 छन्द है |

भाषा :-

तुलसी का शब्द – भण्डार अत्यन्त विशाल है | गोस्वामी जी ने अपने समय की प्रचलित दोनों काव्य भाषाओं **अवधि** और **ब्रज** में समान अधिकार से रचना की है | भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है | भाषा पर जैसा अधिकार तुलसी का था वैसा शायद किसी अन्य कवि का नहीं था | भाषा के सम्बन्ध में – **श्री वियोगी हरी का मत है** – "भाषा के ऊपर गोस्वामी जी का पूरा अधिकार था | वे भाषा के पीछे – पीछे नहीं चलते थे वरन् भाषाए उनका अनुकरण किया करती थी |"

इस प्रकार तुलसीदास ने अपनी विभिन्न कृतियों में परिस्थितियों के अनुकूल सशक्त भाषा का अधिकार पूर्ण प्रयोग किया है | वस्तुत: वे **भाषा के समाट** है |

शैली:-

शैली की दृष्टि से भी तुलसी का काव्य उच्चकोटि की है तुलसी ने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों को अपनाया | वे इस प्रकार है –

1. भाटो की कवित्त – सवैया शैली
2. रहीम की बरवै शैली
3. जायसी की दोहा – चौपाई शैली
4. सूर की गेय – पद (गीतिकाव्य) शैली
5. वीरगाथाकाल की छप्पय शैली

तुलसी के विभिन्न पद्य – शैलियों के सफल विधान की ओर दृष्टिपात करने पर कोई भी व्यक्ति चकित हुए बिना नहीं रह सकता |

साहित्य में स्थान :-

वास्तव में तुलसी हिंदी – साहित्य की महान विभूति है | उन्होंने रामभक्ति की मंदाकिनी प्रवाहित करके जन – जन का जीवन कृतार्थ कर दिया | इस प्रकार रस,भाषा, छन्द, अलंकार, नाटकीयता , संवाद – कौशल आदि सभी दृष्टियों से तुलसी का काव्य अव्दितीय है | उनके

साहित्य में रामगुणगान , भक्ति – भावना , समन्वय , शिवम् की भावना आदि अनेक ऐसी विशेषताएं देखने को मिलाती है , जो उन्हें **महाकवि** के आसन पर प्रतिष्ठित करती है | इनका सम्पूर्ण काव्य समन्वयवाद की विराट चेष्ठा है | ज्ञान की अपेक्षा भक्ति का राजपथ ही इन्हें अधिक रुचिकर लगता है | महाकवि **हरिऔधजी** ने सत्य ही लिखा है कि तुलसी की कला का स्पर्श प्राप्तकर स्वंय कविता ही सुशोभित हुई है —

"कविता करके तुलसी न लेस |
कविता लसी पा तुलसी की कला ||"

तुलसीदास जी के विषय में पढ़िए और जानकारी हासिल कीजिए ।

Wednesday-09/06/21

कबीरदास
(सन् 1440-1518 ई.)

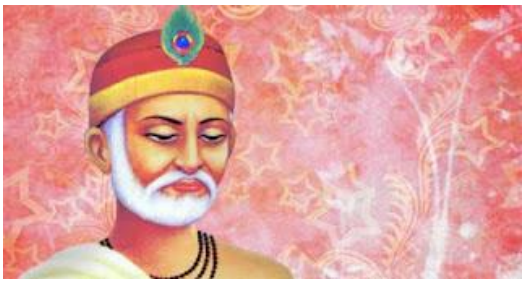

जीवन-परिचय - भारत के महान संत और आध्यात्मिक कवि कबीर दास का जन्म वर्ष 1440 में हुआ था। इस्लाम के अनुसार 'कबीर' का अर्थ महान होता है। इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि उनके असली माता-पिता कौन थे लेकिन ऐसा माना जाता है कि उनका लालन-पालन एक गरीब मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनको नीरु और नीमा (रखवाला) के द्वारा वाराणसी के एक छोटे नगर से पाया गया था। वाराणसी के लहरतारा में संत कबीर मठ में एक तालाब है जहाँ नीरु और नीमा नामक एक जोड़े ने कबीर को पाया था।

ये शांति और सच्ची शिक्षण की महान इमारत है जहाँ पूरी दुनिया के संत वास्तविक शिक्षा की खातिर आते है।कबीर के माँ-बाप बेहद गरीब और अनपढ़ थे लेकिन उन्होंने कबीर को पूरे दिल से स्वीकार किया और

खुद के व्यवसाय के बारे में शिक्षित किया। उन्होंने एक सामान्य गृहस्वामी और एक सूफी के संतुलित जीवन को जीया।

ऐसा माना जाता है कि अपने बचपन में उन्होंने अपनी सारी धार्मिक शिक्षा रामानंद नामक गुरु से ली। और एक दिन वो गुरु रामानंद के अच्छे शिष्य के रुप में जाने गये। उनके महान कार्यों को पढने के लिये अध्येता और विद्यार्थी कबीर दास के घर में ठहरते है। ये माना जाता है कि उन्होंने अपनी धार्मिक शिक्षा गुरु रामानंद से ली। शुरुआत में रामानंद कबीर दास को अपने शिष्य के रुप में लेने को तैयार नहीं थे। लेकिन बाद की एक घटना ने रामानंद को कबीर को शिष्य बनाने में अहम भूमिका निभायी। एक बार की बात है, संत कबीर तालाब की सीढियों पर लेटे हुए थे और रामा-रामा का मंत्र पढ रहे थे, रामानंद भोर में नहाने जा रहे थे और कबीर उनके पैरों के नीचे आ गये इससे रामानंद को अपनी गलती का एहसास हुआ और वे कबीर को अपने शिष्य के रुप में स्वीकार करने को मजबूर हो गये। ऐसा माना जाता है कि कबीर जी का परिवार आज भी वाराणसी के कबीर चौरा में निवास करता है।

हिन्दू धर्म, इस्लाम के बिना छवि वाले भगवान के साथ व्यक्तिगत भक्तिभाव के साथ ही तंत्रवाद जैसे उस समय के प्रचलित धार्मिक स्वाभाव के द्वारा कबीर दास के लिये पूर्वाग्रह था, कबीर दास पहले भारतीय संत थे जिन्होंने हिन्दू और इस्लाम धर्म को सार्वभौमिक रास्ता दिखा कर समन्वित किया जिसे दोनों धर्म के द्वारा माना गया। कबीर के अनुसार हर जीवन का दो धार्मिक सिद्धातों से रिश्ता होता है (जीवात्मा और परमात्मा)। मोक्ष के बारे में उनका विचार था कि ये इन दो दैवीय सिद्धांतों को एक करने की प्रक्रिया है।

उनकी महान रचना **बीजक** में कविताओं की भरमार है जो कबीर के धार्मिकता पर सामान्य विचार को स्पष्ट करता है। कबीर की हिन्दी उनके दर्शन की तरह ही सरल और प्राकृत थी। वो ईश्वर में एकात्मकता का अनुसरण करते थे। वो हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे और भक्ति तथा सूफ़ी विचारों में पूरा भरोसा दिखाते थे।

कबीर के द्वारा रचित सभी कविताएँ और गीत कई सारी भाषाओं में मौजूद है। कबीर और उनके अनुयायियों को उनके काव्यगत धार्मिक भजनों के अनुसार नाम दिया जाता है जैसे बनिस और बोली। विविध रुप में उनके कविताओं को साखी, श्लोक (शब्द) और दोहे (रमेनी) कहा जाता है। साखी का अर्थ है परम सत्य को दोहराते और याद करते रहना। इन अभिव्यक्तियों का स्मरण, कार्य करना और विचारमग्न के द्वारा आध्यात्मिक जागृति का एक रास्ता उनके अनुयायियों और कबीर के लिये बना हुआ है।

सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मुलगड़ी और उसकी परंपरा

कबीरचौरा मठ मुलगड़ी संत-शिरोमणि कबीर दास का घर, ऐतिहासिक कार्यस्थल और ध्यान लगाने की जगह है। वे अपने प्रकार के एकमात्र संत है जो "सब संतन सरताज" के रुप में जाने जाते है। ऐसा माना

जाता है कि जिस तरह संत कबीर के बिना सभी संतों का कोई मूल्य नहीं उसी तरह कबीरचौरा मठ मुलगड़ी के बिना मानवता का इतिहास मूल्यहीन है। कबीरचौरा मठ मुलगड़ी का अपना समृद्ध परंपरा और प्रभावशाली इतिहास है। ये कबीर के साथ ही सभी संतों के लिये साहसिक विद्यापीठ है । मध्यकालीन भारत के भारतीय संतों ने इसी जगह से अपनी धार्मिक शिक्षा प्राप्त की थी। मानव परंपरा के इतिहास में ये साबित हुआ है कि गहरे चिंतन के लिये हिमालय पर जाना जरुरी नहीं है बल्कि इसे समाज में रहते हुए भी किया जा सकता है। कबीर दास खुद इस बात के आदर्श संकेतक थे। वो भक्ति के सच्चे प्रचारक थे साथ ही उन्होंने आमजन की तरह साधारण जीवन लोगों के साथ जीया। पत्थर को पूजने के बजाय उन्होंने लोगों को स्वतंत्र भक्ति का रास्ता दिखाया। इतिहास गवाह है कि यहाँ की परंपरा ने सभी संतों को सम्मान और पहचान दी।

कबीर और दूसरे संतों के द्वारा उनकी परंपरा के इस्तेमाल किये गये वस्तुओं को आज भी कबीर मठ में सुरक्षित तरीके से रखा गया है। सिलाई मशीन, खड़ाऊ, रुद्राक्ष की माला (रामानंद से मिली हुयी), जंग रहित त्रिशूल और इस्तेमाल की गयी दूसरी सभी चीजें इस समय भी कबीर मठ में उपलब्ध है।

ऐतिहासिक कुआँ

कबीर मठ में एक ऐतिहासिक कुआँ है, जिसके पानी को उनकी साधना के अमृत रस के साथ मिला हुआ माना जाता है। दक्षिण भारत से महान पंडित सर्वानंद के द्वारा पहली बार ये अनुमान लगाया गया था। वो यहाँ कबीर से बहस करने आये थे और प्यासे हो गये। उन्होंने पानी पिया और कमाली से कबीर का पता पूछा। कमाली नें कबीर के दोहे के रुप में उनका पता बताया।

“कबीर का शिखर पर, सिलहिली गाल

पाँव ना टिकाई पीपील का, पंडित लड़े बाल”

वे कबीर से बहस करने गये थे लेकिन उन्होंने बहस करना स्वीकार नहीं किया और सर्वानंद को लिखित देकर अपनी हार स्वीकार की। सर्वानंद वापस अपने घर आये और हार की उस स्वीकारोक्ति को अपने माँ को दिखाया और अचानक उन्होंने देखा कि उनका लिखा हुआ उल्टा हो चुका था। वो इस सच्चाई से बेहद प्रभावित हुए और वापस से काशी के कबीर मठ आये बाद में कबीर दास के अनुयायी बने। वे कबीर से इस स्तर तक प्रभावित थे कि अपने पूरे जीवन भर उन्होंने कभी कोई किताब नहीं छुयी। बाद में, सर्वानंद आचार्य सुरतीगोपाल साहब की तरह प्रसिद्ध हुए। कबीर के बाद वे कबीर मठ के प्रमुख बने।

कैसे पहुँचे:

सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मुलगडी वाराणसी के रुप में जाना जाने वाला भारत के प्रसिद्ध सांस्कृतिक शहर में स्थित है। कोई भी यहाँ हवाईमार्ग, रेलमार्ग या सड़कमार्ग से पहुँच सकता है। ये वाराणसी हवाई अड्डे से 18 किमी और वाराणसी रेलवे स्टेशन से 3 किमी की दूरी पर स्थित है।

काशी नरेश यहाँ क्षमा माँगने आये थे:

एक बार की बात है, काशी नरेश राजा वीरदेव सिंह जुदेव अपना राज्य छोड़ने के दौरान माफी माँगने के लिये अपनी पत्नी के साथ कबीर मठ आये थे। कहानी ऐसे है कि: एक बार काशी नरेश ने कबीर दास की ढेरों प्रशंसा सुनकर सभी संतों को अपने राज्य में आमंत्रित किया, कबीर दास राजा के यहाँ अपनी एक छोटी सी पानी के बोतल के साथ पहुँचे। उन्होंने उस छोटे बोतल का सारा पानी उनके पैरों पर डाल दिया, कम मात्रा का पानी देर तक जमीन पर बहना शुरु हो गया। पूरा राज्य पानी से भर उठा, इसलिये कबीर से इसके बारे में पूछा गया उन्होंने कहा कि एक भक्त जो जगन्नाथपुरी में खाना बना रहा था उसकी झोपड़ी में आग लग गयी।

जो पानी मैंने गिराया वो उसके झोपड़ी को आग से बचाने के लिये था। आग बहुत भयानक थी इसलिये छोटे बोतल से और पानी की जरुरत हो गयी थी। लेकिन राजा और उनके अनुयायी इस बात को स्वीकार नहीं किया और वे सच्चा गवाह चाहते थे। उनका विचार था कि आग लगी उड़ीसा में और पानी डाला जा रहा है काशी में। राजा ने अपने एक अनुगामी को इसकी छानबीन के लिये भेजा। अनुयायी आया और बताया कि कबीर ने जो कहा था वो बिल्कुल सत्य था। इस बात के लिये राजा बहुत शर्मिंदा हुए और तय किया कि वो माफी माँगने के लिये अपनी पत्नी के साथ कबीर मठ जाएँगे। अगर वो माफी नहीं देते है तो वो वहाँ आत्महत्या कर लेंगे। उन्हें वहाँ माफी मिली और उस समय से राजा कबीर मठ से हमेशा के लिये जुड़ गये।

समाधि मंदिर:

समाधि मंदिर वहाँ बना है जहाँ कबीर दास अक्सर अपनी साधना किया करते थे। सभी संतों के लिये यहाँ समाधि से साधना तक की यात्रा पूरी हो चुकी है। उस दिन से, ये वो जगह है जहाँ संत अत्यधिक ऊर्जा के बहाव को महसूस करते है। ये एक विश्व प्रसिद्ध शांति और ऊर्जा की जगह है। ऐसा माना जाता है कि उनकी मृत्यु के बाद लोग उनके शरीर के अंतिम संस्कार को लेकर झगड़ने लगे। लेकिन जब समाधि कमरे के दरवाजे को खोला गया, तो वहाँ केवल दो फूल थे जो अंतिम संस्कार के लिये उनके हिन्दू और मुस्लिम अनुयायियों के बीच बाँट दिया गया। मिर्ज़ापुर के मोटे पत्थर से समाधि मंदिर का निर्माण किया गया है।

कबीर चबूतरा पर बीजक मंदिर:

ये जगह कबीर दास का कार्यस्थल होने के साथ साधना स्थल भी था। ये वो जगह है जहाँ कबीर ने अपने अनुयायियों को भक्ति, ज्ञान, कर्म और मानवता की शिक्षा दी। इस जगह का नाम रखा गया कबीर

चबूतरा। बीजक कबीर दास की महान रचना थी इसी वजह से कबीर चबूतरा का नाम बीजक मंदिर रखा गया।

कबीर तेरी झोपड़ी, गलकट्टो के पास।

जो करेगा वो भरेगा, तुम क्यों होत उदास।

उत्तर भारत में अपने भक्ति आंदोलन के लिये बड़े पैमाने पर मध्यकालीन भारत के एक भक्ति और सूफी संत थे कबीर दास। इनका जीवन चक्र काशी (इसको बनारस या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है) के केन्द्र में था। वो माता-पिता की वजह से बुनकर व्यवसाय से जुड़े थे और जाति से जुलाहा थे। इनके भक्ति आंदोलन के लिये दिये गये विशाल योगदान को भारत में नामदेव, रविदास, और फरीद के साथ पथप्रदर्शक के रुप में माना जाता है। वे मिश्रित आध्यात्मिक स्वाभाव के संत थे (नाथ परंपरा, सूफिज्म, भक्ति) जो खुद से उन्हंट विशिष्ट बनाता है। उन्होंने कहा है कि कठिनाई की डगर सच्चा जीवन और प्यार है।

15वीं शताब्दी में, वाराणसी में लोगों के जीवन के सभी क्षेत्रों में शिक्षण केन्द्रों के साथ ही ब्राह्मण धर्मनिष्ठता के द्वारा मजबूती से संघटित हुआ था। जैसा कि वे एक निम्न जाति जुलाहा से संबंध रखते थे कबीर दास अपने विचारों को प्रचारित करने में कड़ी मेहनत करते थे। वे कभी भी लोगों में भेदभाव नहीं करते थे चाहे वो वैश्या, निम्न या उच्च जाति से संबंध रखता हो। वे खुद के अनुयायियों के साथ सभी को एक साथ उपदेश दिया करते थे। ब्राह्मणों द्वारा उनका अपने उपदेशों के लिये उपहास उड़ाया जाता था लेकिन वे कभी उनकी बुराई नहीं करते थे इसी वजह से कबीर सामान्य जन द्वारा बहुत पसंद किये जाते थे। वे अपने दोहो के द्वारा जीवन की असली सच्चाई की ओर आम-जन के दिमाग को ले जाने की शुरुआत कर चुके थे।

वे हमेशा मोक्ष के साधन के रुप में कर्मकाण्ड और सन्यासी तरीकों का विरोध करते थे। उन्होंने कहा कि अपनों के लाल रंग से ज्यादा महत्व है अच्छाई के लाल रंग का। उनके अनुसार, अच्छाई का एक दिल पूरी दुनिया की समृद्धि को समाहित करता है। एक व्यक्ति दया के साथ मजबूत होता है, क्षमा उसका वास्तविक अस्तित्व है तथा सही के साथ कोई व्यक्ति कभी न समाप्त होने वाले जीवन को प्राप्त करता है। कबीर ने कहा कि भगवान आपके दिल में है और हमेशा साथ रहेगा। तो उनकी भीतरी पूजा कीजिये। उन्होंने अपने एक उदाहरण से लोगों का दिमाग परिवर्तित कर दिया कि अगर यात्रा करने वाला चलने के काबिल नहीं है, तो यात्री के लिये रास्ता क्या करेगा।

उन्होंने लोगों की आँखों को खोला और उन्हें मानवता, नैतिकता और धार्मिकता का वास्तविक पाठ पढाया। वे अहिंसा के अनुयायी और प्रचारक थे। उन्होंने अपने समय के लोगों के दिमाग को अपने क्रांतिकारी भाषणों से बदल दिया। कबीर के पैदा होने और वास्तविक परिवार का कोई पुख्ता प्रमाण मौजूद नहीं है। कुछ कहते है कि वो मुस्लिम परिवार में जन्मे थे तो कोई कहता है कि वो उच्च वर्ग के ब्राह्मण परिवार से

थे। उनके निधन के बाद हिन्दू और मुस्लिमों में उनके अंतिम संस्कार को लेकर विवाद हो गया था। उनका जीवन इतिहास प्रसिद्ध है और अभी तक लोगों को सच्ची इंसानियत का पाठ पढाता है।

कबीर दास का धर्म

कबीर दास के अनुसार, जीवन जीने का तरीका ही असली धर्म है जिसे लोग जीते है ना कि वे जो लोग खुद बनाते है। उनके अनुसार कर्म ही पूजा है और जिम्मेदारी ही धर्म है। वे कहते थे कि अपना जीवन जीयो, जिम्मेदारी निभाओ और अपने जीवन को शाश्वत बनाने के लिये कड़ी मेहनत करो। कभी भी जीवन में सन्यासियों की तरह अपनी जिम्मेदारियों से दूर मत जाओ। उन्होंने पारिवारिक जीवन को सराहा है और महत्व दिया है जो कि जीवन का असली अर्थ है। वेदों में यह भी उल्लिखित है कि घर छोड़ कर जीवन को जीना असली धर्म नहीं है। गृहस्थ के रुप में जीना भी एक महान और वास्तविक सन्यास है। जैसे, निर्गुण साधु जो एक पारिवारिक जीवन जीते है, अपनी रोजी-रोटी के लिये कड़ी मेहनत करते है और साथ ही भगवान का भजन भी करते है।

कबीर ने लोगों को विशुद्ध तथ्य दिया कि इंसानियत का क्या धर्म है जो कि किसी को अपनाना चाहिये। उनके इस तरह के उपदेशों ने लोगों को उनके जीवन के रहस्य को समझने में मदद किया।

कबीर दास: एक हिन्दू या मुस्लिम

ऐसा माना जाता है कि कबीर दास के मृत्यु के बाद हिन्दू और मुस्लिमों ने उनके शरीर को पाने के लिये अपना-अपना दावा पेश किया। दोनों धर्मों के लोग अपने रीति-रिवाज और परंपरा के अनुसार कबीर का अंतिम संस्कार करना चाहते थे। हिन्दुओं ने कहा कि वो हिन्दू थे इसलिये वे उनके शरीर को जलाना चाहते है जबकि मुस्लिमों ने कहा कि कबीर मुस्लिम थे इसलिये वो उनको दफनाना चाहते है।

लेकिन जब उन लोगों ने कबीर के शरीर पर से चादर हटायी तो उन्होंने पाया कि कुछ फूल वहाँ पर पडे है। उन्होंने फूलों को आपस में बाँट लिया और अपने-अपने रीति-रिवाजों से महान कबीर का अंतिम संस्कार संपन्न किया। ऐसा भी माना जाता है कि जब दोनों समुदाय आपस में लड रहे थे तो कबीर दास की आत्मा आयी और कहा कि "ना ही मैं हिन्दू हूँ और ना ही मैं मुसलमान हूँ। यहाँ कोई हिन्दू या मुसलमान नहीं है। मैं दोनों हूँ, मैं कुछ नहीं हूँ, और सब हूँ। मैं दोनों मे भगवान देखता हूँ। उनके लिये हिन्दू और मुसलमान एक है जो इसके गलत अर्थ से मुक्त है। परदे को हटाओ और जादू देखो"।

कबीर दास का मंदिर काशी के कबीर चौराहा पर बना है जो भारत के साथ ही विदेशी सैलानियों के लिये भी एक बड़े तीर्थस्थान के रुप में प्रसिद्ध हो गया है। मुस्लिमों द्वारा उनके कब्र पर एक मस्जिद बनायी गयी है जो मुस्लिमों के तीर्थस्थान के रुप में बन चुकी है।

कबीर दास के भगवान

कबीर के गुरु रामानंद ने उन्हें गुरु मंत्र के रुप में भगवान 'रामा' नाम दिया था जिसका उन्होंने अपने तरीके से अर्थ निकाला था। वे अपने गुरु की तरह सगुण भक्ति के बजाय निर्गुण भक्ति को समर्पित थे। उनके रामा संपूर्ण शुद्ध सच्चदानंद थे, दशरथ के पुत्र या अयोध्या के राजा नहीं जैसा कि उन्होंने कहा "दशरथ के घर ना जन्में, ई चल माया किनहा"। वो इस्लामिक परंपरा से ज्यादा बुद्धा और सिद्धा से बेहद प्रभावित थे। उनके अनुसार "निर्गुण नाम जपो रहे भैया, अविगति की गति लाखी ना जैया"।

उन्होंने कभी भी अल्लाह या राम में फर्क नहीं किया, कबीर हमेशा लोगों को उपदेश देते कि ईश्वर एक है बस नाम अलग है। वे कहते है कि बिना किसी निम्न और उच्च जाति या वर्ग के लोगों के बीच में प्यार और भाईचारे का धर्म होना चाहिये। ऐसे भगवान के पास अपने आपको समर्पित और सौंप दो जिसका कोई धर्म नहीं हो। वो हमेशा जीवन में कर्म पर भरोसा करते थे।

कबीर दास की मृत्यु

15 शताब्दी के सूफी कवि कबीर दास के बारे में ऐसा माना जाता है कि उन्होंने अपने मरने की जगह खुद से चुनी थी, **मगहर**, जो लखनउ शहर से 240 किमी दूरी पर स्थित है। लोगों के दिमाग से मिथक को हटाने के लिये उन्होंने ये जगह चुनी थी उन दिनों, ऐसा माना जाता था कि जिसकी भी मृत्यु मगहर में होगी वो अगले जन्म में बंदर बनेगा और साथ ही उसे स्वर्ग में जगह नहीं मिलेगी। कबीर दास की मृत्यु काशी के बजाय मगहर में केवल इस वजह से हुयी थी क्योंकि वो वहाँ जाकर लोगों के अंधविश्वास और मिथक को तोड़ना चाहते थे। 1575 विक्रम संवत में हिन्दू कैलेंडर के अनुसार माघ शुक्ल एकादशी के वर्ष 1518 में जनवरी के महीने में मगहर में उन्होंने दुनिया को अलविदा कहा। ऐसा भी माना जाता है कि जो कोई भी काशी में मरता है वो सीधे स्वर्ग में जाता है इसी वजह से मोक्ष की प्राप्ति के लिये हिन्दू लोग अपने अंतिम समय में काशी जाते है। एक मिथक को मिटाने के लिये कबीर दास की मृत्यु काशी के बाहर हुयी। इससे जुड़ा उनका एक खास कथन है कि "जो कबीरा काशी मुएतो रामे कौन निहोरा" अर्थात अगर स्वर्ग का रास्ता इतना आसान होता तो पूजा करने की जरुरत क्या है।

कबीर दास का शिक्षण व्यापक है और सभी के लिये एक समान है क्योंकि वो हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख और दूसरे किसी धर्मों में भेदभाव नहीं करते थे। मगहर में कबीर दास की समाधि और मजार दोनों है। कबीर की मृत्यु के बाद हिन्दू और मुस्लिम धर्म के लोग उनके अंतिम संस्कार के लिये आपस में भिड़ गये थे। लेकिन उनके मृत शरीर से जब चादर हटायी गयी तो वहाँ पर कुछ फूल पड़े थे जिसे दोनों समुदायों के लोगों ने आपस में बाँट लिया और फिर अपने अपने धर्म के अनुसार कबीर जी का अंतिम संस्कार किया।

समाधि से कुछ मीटर दूरी पर एक गुफा है जो मृत्यु से पहले उनके ध्यान लगाने की जगह को इंगित करती है। उनके नाम से एक ट्रस्ट चल रहा है जिसका नाम है कबीर शोध संस्थान जो कबीर दास के कार्यों पर

शोध को प्रचारित करने के लिये शोध संस्थान के रुप में है। वहाँ पर शिक्षण संस्थान भी है जो कबीर दास के शिक्षण को भी समाहित किया हुआ है।

कबीर दास: एक सूफी संत

भारत में मुख्य आध्यात्मिक कवियों में से एक कबीर दास महान सूफी संत थे जो लोगों के जीवन को प्रचारित करने के लिये अपने दार्शनिक विचार दिये। उनका दर्शन कि ईश्वर एक है और कर्म ही असली धर्म है ने लोगों के दिमाग पर गहरी छाप छोडी। उनका भगवान की ओर प्यार और भक्ति ने हिन्दू भक्ति और मुस्लिम सूफी के विचार को पूरा किया।

ऐसा माना जाता है कि उनका संबंध हिन्दू ब्राह्मण परिवार से था लेकिन वे बिन बच्चों के मुस्लिम परिवार नीरु और नीमा द्वारा अपनाये गये थे । उन्हें उनके माता-पिता द्वारा काशी के लहरतारा में एक तालाब में बडे से कमल के पत्ते पर पाया गया था। उस समय दकियानूसी हिन्दू और मुस्लिम लोगों के बीच में बहुत सारी असहमति थी जो कि अपने दोहों के द्वारा उन मुद्दों को सुलझाना कबीर दास का मुख्य केन्द्र बिन्दु था

पेशेवर ढग से वो कभी कक्षा में नहीं बैठे लेकिन वो बहुत ज्ञानी और अध्यात्मिक व्यक्ति थे। कबीर ने अपने दोहे औपचारिक भाषा में लिखे जो उस समय अच्छी तरह से बोली जाती थी जिसमें ब्रज, अवधि और भोजपुरी समाहित थी। उन्होंने बहुत सारे दोहे तथा सामाजिक बंधंनों पर आधारित कहानियों की किताबें लिखी।

कबीर दास की रचनाएँ

कबीर के द्वारा लिखी गयी पुस्तकें सामान्यत: दोहा और गीतों का समूह होता था। संख्या में उनका कुल कार्य 72 था और जिसमें से कुछ महत्पूर्ण और प्रसिद्ध कार्य है जैसे रक्त, कबीर बीजक, सुखनिधन, मंगल, वसंत, शब्द, साखी, और होली अगम।

कबीर की लेखन शैली और भाषा बहुत सुंदर और साधारण होती है। उन्होंने अपना दोहा बेहद निडरतापूर्वक और सहज रुप से लिखा है जिसका कि अपना अर्थ और महत्व है। कबीर ने दिल की गहराईयों से अपनी रचनाओं को लिखा है। उन्होंने पूरी दुनिया को अपने सरल दोहों में समेटा है। उनका कहा गया किसी भी तुलना से ऊपर और प्रेरणादायक है।

कबीर दास जी की मुख्य रचनाएं

साखी– इसमें ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं और सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है।

Thursday- 10/06/21

सूरदास का जीवन परिचय –

7 5,177 6 minutes read

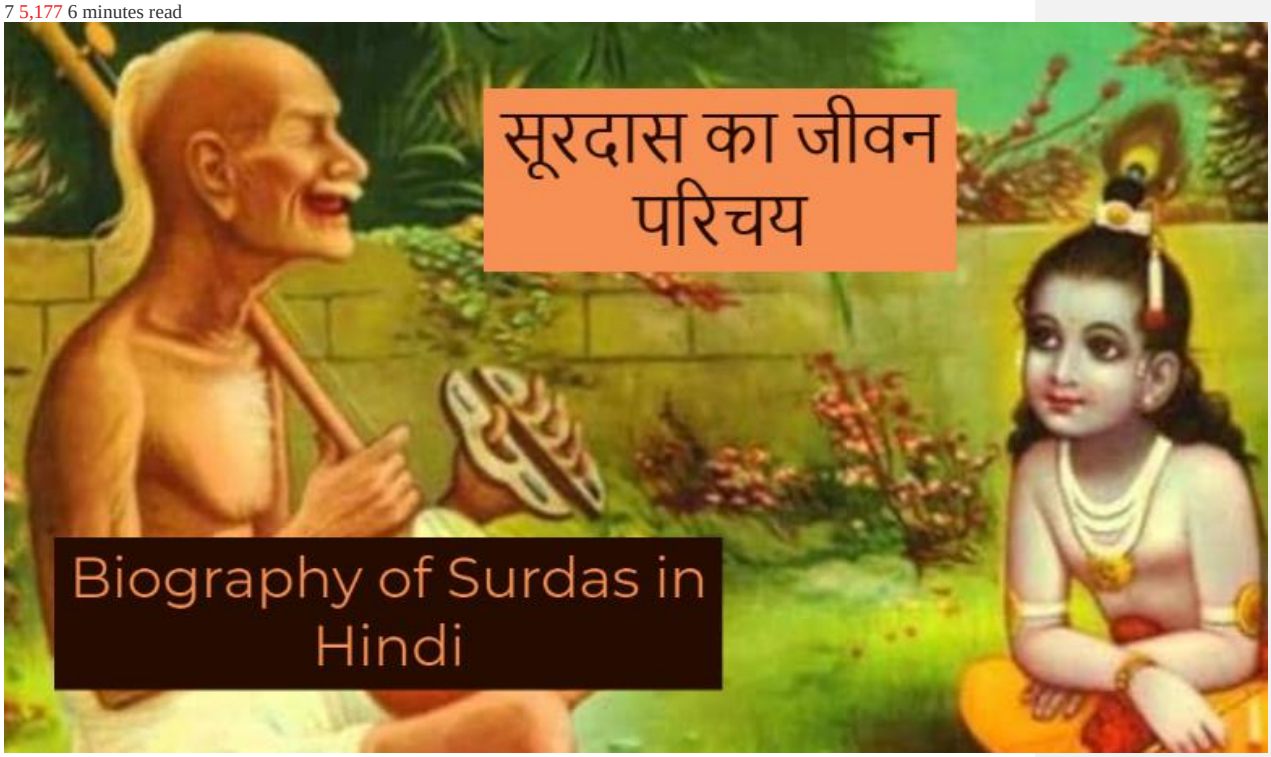

surdas biography in hindi

जिन्हें माना जाता है वात्सल्य रस का सम्राट ..जानिए विस्तार से **सूरदास** जी के जन्म से लेकर मृत्यु तक के बारे में।

15 वीं सदी को अपनी रचनाओं से प्रभावित करने वाले कवि, महान् संगीतकार और संत थे **सूरदास** जी। **सूरदास** सिर्फ एक सदी को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को अपने काव्य से रोशन किया है। **सूरदास** जी की रचना की प्रशंसा करते हुए **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है कि काव्य गुणों की विशाल वनस्थली में सूरदास जी का एक अपना सहज सौन्दर्य है। **सूरदास** जी उस रमणीय उद्यान के समान नहीं जिनका सौन्दर्य पद पद पर माली के कृतित्व की याद दिलाता हो। बल्कि उस अकृत्रिम वन भूमि की तरह है, जिसका रचयिता स्वंय रचना में घुलमिल गया हो।

Table of Contents

सूरदास जीवनी – Biography of Surdas in Hindi Jivani

सूरदास कौन थे- वात्सल्य रस के सम्राट महाकवि **सूरदास** का जन्म 1478 ईसवी में रुनकता नामक गांव में हुआ था। हालांकि कुछ लोग **सीही को सूरदास की जन्मस्थली मानते** है। इनके **पिता का नाम पण्डित रामदास सारस्वत** ब्राह्मण थे और इनकी **माता का नाम जमुनादास** था। **सूरदास जी को पुराणों और उपनिषदों का विशेष ज्ञान** था।

Formatted: Font: (Default) Segoe UI, 11.5 pt, Font color: Custom Color(RGB(44,47,52))

सूरदास जी जन्म से अंधे थे या नहीं। इस बारे में कोई प्रमाणित सबूत नहीं है। लेकिन माना जाता है कि श्री कृष्ण बाल मनोवृत्तियों और मानव स्वभाव का जैसा वर्णन **सूरदास** जी ने किया था। ऐसा कोई जन्म से अंधा व्यक्ति कभी कर ही नहीं सकता। इसलिए माना जाता है कि वह अपने जन्म के बाद अंधे हुए होंगे।

सूरदास जी अंधे थे- सूरदास जी जन्म से अंधे थे या नहीं। इस बारे में कोई प्रमाणित सबूत नहीं है। लेकिन माना जाता है कि श्री कृष्ण बाल मनोवृत्तियों और मानव स्वभाव का जैसा वर्णन **सूरदास** जी ने किया था। ऐसा

कोई जन्म से अंधा व्यक्ति कभी कर ही नहीं सकता। इसलिए माना जाता है कि वह अपने जन्म के बाद अंधे हुए होंगे। तो वहीं हिंदी साहित्य के ज्ञाता **श्यामसुन्दर दास** ने भी लिखा है कि **सूरदास** जी वास्तव में अंधे नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार और रूप-रंग आदि का जो वर्णन महाकवि **सूरदास** ने किया वह कोई जन्मान्ध व्यक्ति नहीं कर सकता है।

सूरदास का विवाह- कहा जाता है कि सूरदास जी ने विवाह किया था। हालांकि इनके विवाह को लेकर कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं लेकिन फिर भी इनकी पत्नी का नाम रत्नावली माना गया है। कहा जाता है कि संसार से विरक्त होने से पहले सूरदास जी अपने परिवार के साथ ही जीवन व्यतीत किया करते थे।

यह भी पढें – श्री कृष्ण की बाल लीलाएं और सूरदास के कृष्ण

सूरदास के गुरु

अपने परिवार से विरक्त होने के पश्चात् **सूरदास** जी दीनता के पद गाया करते थे। तभी **सूरदास** के मुख से भक्ति का एक पद सुनकर **श्री वल्लभाचार्य** ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया। जिसके बाद वह कृष्ण भगवान का स्मरण और उनकी लीलाओं का वर्णन करने लगे। साथ ही वह **आचार्य वल्लभाचार्य** के साथ मथुरा के गऊघाट पर स्थित श्रीनाथ के मंदिर में भजन कीर्तन किया करते थे। महान् कवि **सूरदास** आचार्य वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। और यह अष्टछाप कवियों में भी सर्वश्रेष्ठ स्थान रखते थे।

श्रीकृष्ण गीतावली- कहा जाता है कि कवि **सूरदास** से प्रभावित होकर ही तुलसीदास जी ने महान् ग्रंथ श्री कृष्णगीतावली की रचना की थी। और इन दोनों के बीच तबसे ही प्रेम और मित्रता का भाव बढने लगा था।

सूरदास का राजघरानों से संबंध- महाकवि **सूरदास** के भक्तिमय गीतों की गूंज चारों तरफ फैल रही थी। जिसे सुनकर स्वंय महान् शासक अकबर भी **सूरदास** की रचनाओं पर मुग्ध हो गए थे। जिसने उनके काव्य से प्रभावित होकर अपने यहां रख लिया था। आपको बता दें कि **सूरदास** के काव्य की ख्याति बढने के बाद हर कोई **सूरदास** को पहचानने लगा। ऐसे में अपने जीवन के अंतिम दिनों को **सूरदास** ने ब्रज में व्यतीत किया, जहां रचनाओं के बदले उन्हें जो भी प्राप्त होता। उसी से सूरदास अपना जीवन बसर किया करते थे।

यह भी पढें – महाभारत से सीख : महाभारत से सीखिए नैतिकता की परिभाषा

सूरदास की रचनाएं

माना जाता है कि **सूरदास** जी ने हिन्दी काव्य में लगभग सवा लाख पदों की रचना की। साथ ही सूरदास जी द्वारा लिखे पांच ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं, **सूर सागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी, नल दमयन्ती, सूर पच्चीसी, गोवर्धन लीला, नाग लीला, पद संग्रह और ब्याहलो**। तो वहीं दूसरी ओर सूरदास जी अपनी कृति सूर सागर के लिए काफी प्रसिद्ध हैं, जिनमें उनके द्वारा लिखे गए 100000 गीतों में से 8000 ही मौजूद हैं। उनका मानना था कि कृष्ण भक्ति से ही मनुष्य जीवन को सद्गति प्राप्त हो सकती है।

इस प्रकार **सूरदास** जी ने भगवान कृष्ण की भक्ति कर बेहद ही खूबसूरती से उनकी लीलाओं का व्याख्यान किया है। जिसके लिए उन्होंने अपने काव्य में श्रृंगार, शांत और वात्सल्य तीनों ही रसों को अपनाया है। इसके अलावा काशी नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में सूरदास जी द्वारा रचित 25 ग्रंथों की उपस्थिति मिलती

है। साथ ही सूरदास जी के काव्य में भावपद और कलापक्ष दोनों ही समान अवस्था में मिलते है। इसलिए इन्हें सगुण कृष्ण भक्ति काव्य धारा का प्रतिनिधि कवि कहा जाता है।

सूरदास की भाषा शैली

सूरदास जी ने अपनी काव्यगत रचनाओं में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। साथ ही उन्होंने अपनी रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। तो वहीं सभी पद गेय हैं और उनमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इसके अलावा **सूरदास** जी ने सरल और प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया है।

सूरदास की काव्यगत विशेषताएं

सूरदास जी को हिंदी काव्य का श्रेष्ठता माना जाता है। उनकी काव्य रचनाओं की प्रशंसा करते हुए डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि **सूरदास** जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोडकर उनके पीछे-पीछे दौडा करता है। और उपमाओं की बाढ आ जाती है और रूपकों की बारिश होने लगती है। साथ ही **सूरदास** ने भगवान कृष्ण के बाल्य रूप का अत्यंत सरस और सजीव चित्रण किया है। **सूरदास** जी ने भक्ति को श्रृगांर रस से जोडकर काव्य को एक अद्भुत दिशा की ओर मोड दिया था। साथ ही **सूरदास** जी के काव्य में प्राकृतिक सौन्दर्य का भी जीवांत उल्लेख मिलता है। इतना ही नहीं **सूरदास** जी ने काव्य और कृष्ण भक्ति का जो मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया, वह अन्य किसी कवि की रचनाओं में नहीं मिलता।

यह भी पढें – क्या पुराणों को मिथ्या माना जाना चाहिए?

सूरदास के दोहे- Surdas ke dohe

Formatted: Font: (Default) Segoe UI, 11.5 pt, Font color: Custom Color(RGB(44,47,52))

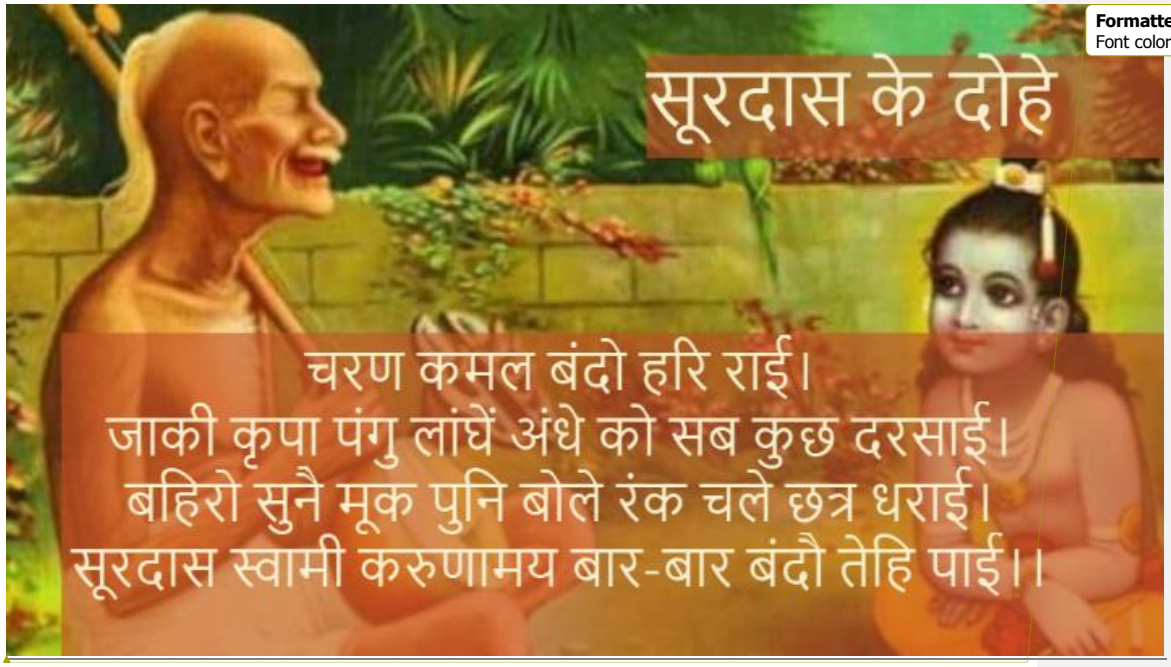

सूरदास के दोहे

चरण कमल बंदो हरि राई।

जाकी कृपा पंगु लांघें अंधे को सब कुछ दरसाई।

बहिरो सुनै मूक पुनि बोले रंक चले छत्र धराई।

सूरदास स्वामी करुणामय बार-बार बंदौ तेहि पाई।।

भावार्थ- **सूरदास** के अनुसार, श्री कृष्ण की कृपा होने पर लंगडा व्यक्ति भी पहाड लांघ सकता है। अंधे को सब कुछ दिखाई देने लगता है। बहरे को सब कुछ सुनाई देने लगता है और गूंगा व्यक्ति बोलने लगता है। साथ ही एक गरीब व्यक्ति अमीर बन जाता है। ऐसे में श्री कृष्ण के चरणों की वंदना कोई क्यों नहीं करेगा।

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।
सूर स्याम मौहिं गोधन की सौं, हौं माता तो पूत।।

भावार्थ- उपयुक्त दोहे से तात्पर्य है कि श्री कृष्ण अपनी माता यशोदा से शिकायत करते हैं कि उनके बड़े भाई बलराम उन्हें यह कहकर चिढाते हैं, कि आपने मुझे पैसे देकर खरीदा है। और अब बलराम के साथ खेलने नहीं

जाऊंगा। ऐसे में श्री कृष्ण बार-बार माता यशोदा से पूछते है कि बताओ माता मेरे असली माता पिता कौन है। माता यशोदा गोरी हैं परंतु मैं काला कैसे हूं। श्रीकृष्ण के इन सवालों को सुनकर ग्वाले सुनकर मुस्कुराते हैं।

अबिगत गति कछु कहत न आवै।

ज्यो गूंगों मीठे फल की रास अंतर्गत ही भावै।

भावार्थ- जिस प्रकार से एक गूंगा व्यक्ति मीठे फल का स्वाद चख तो सकता है लेकिन उसके स्वाद के बारे में किसी से जिक्र तक नहीं कर सकता। ठीक उसी प्रकार से निराकार ब्रहमा की गति के विषय में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

जसोदा हरि पालनै झुलावै।

हलरावै दुलरावै मल्हावै जोई सोई कछु गावै।।

भावार्थ- यशोदा जी भगवान श्री कृष्ण को पालने में झूला रही है। कभी उन्हें झूला झूलाते है और कभी उन्हें प्यार से पुचकारती है। कभी गाते हुए कहती है कि निंद्रा तू मेरे लाल के पास आ जा। तू आकर इसे क्यों नहीं सुलाती है।

मैया मोहि मैं नही माखन खायौ।

भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायौ।।

भावार्थ- सूरदास के अनुसार, श्री कृष्ण अपनी माता यशोदा से कहते हैं कि मैंने माखन नहीं खाया है। आप सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे भेज देती हैं। और जिसके बाद में शाम को ही लौटता हूं। ऐसे में मैं कैसे माखन चोर हो सकता हूं।

सूरदास की मृत्यु कब हुई

मां भारती का यह पुत्र 1583 ईसवी में गोवर्धन के पास स्थित पारसौली गांव में सदैव के लिए दुनिया से विदा हो गया। **सूरदास** जी ने काव्य की धारा को एक अलग ही गति प्रदान की। जिसके माध्यम से उन्होंने हिंदी गद्य और पद्य के क्षेत्र में भक्ति और श्रृंगार रस का बेजोड़ मेल प्रस्तुत किया है। और हिंदी काव्य के क्षेत्र में उनकी रचनाएं एक अलग ही स्थान रखती है। साथ ही ब्रज भाषा को साहित्यिक दृष्टि से उपयोगी बनाने का श्रेय **महाकवि सूरदास** को ही जाता है।

Friday-11/06/21

मोहन राकेश का जीवन परिचय

March 22, 2018 /

मोहन राकेश, 1950 के दशक की हिंदी साहित्य पत्रिका नई कहानी (शाब्दिक "न्यू स्टोरी") आंदोलन के साहित्यकार थे, जिन्होंने उपन्यास, यात्रा, आलोचना, संस्मरण, लघु कथा और नाटक में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इनका जन्म 8 जनवरी 1925 को अमृतसर में हुआ था। उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी में अपनी स्नातकोत्तर की डिग्री पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी।

मोहन राकेश एक प्रतिभापूर्ण नाटककार और उपन्यासकार थे। जैसे-जैसे हम उनके प्रारम्भिक कार्यों का अवलोकन करते हैं, वैसे-वैसे हम उनके कार्यों में एक क्रमिक विकास पाते हैं। धीरे-धीरे ये मानव जाति के भाग्य और आकांक्षाओं के करीब आ गये। वह एक प्रमुख कथाकार थे और हिंदी भाषा पर उनका उत्कृष्ट नियंत्रण था। उन्होंने ज्यादातर शहरी मध्यवर्गीय लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं के बारे में लिखा।

मोहन राकेश ने अपनी जीविका चलाने के लिए शिक्षण कार्य किया। कुछ साल तक वह 'सारिका' के संपादक भी रहे थे। उपन्यास शैली में- अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल, ना होने वाला कल आदि, कुछ प्रमुख कहानी संग्रह में- क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ आदि, प्रमुख नाटकों में- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस और आधे अधूरे आदि मोहन राकेश की कुछ प्रमुख कृतियाँ है। मोहन राकेश के तीन नाटक आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस और आधे अधूरे बहुत ही प्रसिद्ध हुये हैं, जिन्होंने थिएटर की दुनिया में एक उत्साह पैदा कर दिया है। उनके नाटक उस समय के निर्देशकों की पहली पसंद थे।

आधे अधूरे शीर्षक का नाटक मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन पर आधारित एक दुखद कॉमेडी है। उन्होंने मृच्छकटिका और शाकुंतलम का अनुवाद भी किया था।

मोहन राकेश को संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया था।

हिंदी के महान लेखक मोहन राकेश 3 जनवरी 1972 को नई दिल्ली में इस संसार को छोड़कर चले गये।

निर्देश –

दिए गए सभी लेखक के जीवन परिचय तथा कृतियों अथवा रचनाओं के विषय में पढ़ कर जानकारी हासिल कीजिए ।

सभी को जानना अनिवार्य है ।

मुख्य बातों पर ध्यान दीजिए और उसका सारांश भी अपनी शब्दों में लिखिए ।

कुछ वर्तनी गलत हैं कृप्या उन्हें नज़र अन्दाज़ ना करें बल्कि, सुधार कर लिखिए और पढ़िए।

समाप्त